(3) संकीर्ण दृष्टिकोण (Narrow Perspective) :— भारतीय समाज में लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। लड़का और लड़की में भेदभाव किया जाता है। रूढ़िवादी सोच के कारण पुत्र को मोक्ष-प्राप्ति का साधन माना जाता है। कहीं-कहीं तो कन्या को दहेज आदि कुप्रथाओं और समाज में 'इज्जत' की नजर से देखे जाने के कारण आज के दौर में पढ़ी-लिखी महिलायें भी 'कन्या भ्रूण-हत्या' में भागीदारी निभा रही हैं।

समाज के इस दृष्टिकोण के कारण लड़कियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। उन पर अनेक पाबन्दियाँ लगायी जाती हैं। उन्हें शान्त, सौम्य, सहनशील और आज्ञाकारी होने के उपदेश दिये जाते हैं। बाल्यावस्था से ही उन्हें सामाजिक निर्योग्यता का अहसास कराया जाता है। अभिभावकों का लड़कियों की शिक्षा के प्रति उदासीनता वाला दृष्टिकोण भी स्कूल छोड़ने वाली बालिकाओं की संख्या को बढ़ा देता है।

(4) लड़कियों के विरुद्ध अपराध (Crime against Girls) :— बाल्यावस्था में ही बहुत-सी लड़कियाँ शारीरिक हिंसा, यौन उत्पीड़न, बलात्कार, अपहरण, हत्या आदि का आदि का शिकार हो जाती हैं और इसके

Scanned with CamScanner

विरुद्ध परिवार एवं रिश्तेदारों द्वारा आवाज न उठाना एक बड़ी समस्या है। यह समस्या भारतीय समाज में व्यापक है। संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं की पैरवी करने वाली हमारी जातीय और खाप पंचायतें ऐसे-ऐसे फरमान जारी करती रहती है जो बालिकाओं के विकास के मार्ग में चुनौतियाँ बन जाती है। बहुत से ऐसे भी केस दर्ज होते है जहाँ विद्यालयों में भी बालिकायें सुरक्षित नहीं होती, अध्यापकों और सहपाठियों की कुदृष्टि का शिकार हो जाती है।

(5) भेदभाव (Discrimination) :— सांस्कृतिक मूल्यों, माँ के काम में बटाने, डर की भावना, मूलतः घर संभालने की सोच आदि कारणों से बालिकायें भेदभाव का शिकार होती रहती है। लड़कियों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अभिभावकों में रुचि और जागरूकता का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। लड़कियों में कुपोषण का कारण भोजन की कमी न होकर उन तक भोजन का न पहुँच पाना है। कम भोजन के कारण उनका शारीरिक और गामक विकास प्रभावित होता है उनका वजन कम होता है, वे छोटी-छोटी बीमारी से संघर्ष नहीं कर पाती। समाज में आज भी कई जगह लड़कों को अच्छा खाना-पीना और लड़कियों को किसी तरह से जिन्दा रहे इस तरह से ध्यान दिया जाता है

Scanned with CamScanner

(6) बाल्यावस्था प्रशिक्षण (Childhood Training) :—

लड़की को बचपन से ही कम बोलना, प्रतिवाद-विवाद न करने, खामोश रहने के लिए सिखाया जाता है। बराबर बोलना, वाद-विवाद करना उसके लिए निषिद्ध होता है। अधिक बोलने वाली, तर्कशील, जागरूक लड़कियों को बुरी और संदिग्ध निगाहों से देखा जाता है। इस तरह के दबाव के कारण बालिकाओं का स्वाभाविक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास अवरुद्ध होता है। वे पराधीन, उपेक्षिता बनने लगती हैं। उनकी रचनात्मक शक्ति और अनुभवों की उपेक्षा होती है। वे अपने अधिकारों को समझने में अक्षम रहती हैं जिसका बीभत्स परिणाम उन्हें आगे चलकर देखना पड़ता है। बाल्यावस्था में ही उनका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है, बड़ी होकर सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक दबाव में पिसती रहती हैं। उनकी सक्रियता और प्रतिभा समाप्त हो जाती है।

(7). मानव अधिकार (Human Rights) —

वास्तविकता यह है कि भारतीय सांस्कृतिक वर्चस्व में बालिकाओं के मानवाधिकारों का कोई स्थान नहीं होता। उन पर नैतिकतायें थोपी जाती हैं। उन्हें स्वत्वाधिकारों का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला वातावरण ही नहीं मिलता।

Scanned with CamScanner

उनकी इच्छा - अनिच्छा को सम्मान नहीं दिया जाता।

* हाशिए पर रहने वाले समुदाय का विकास (Growing UP in Marginalized Communit

भूमिका :— हमारे समाज में रहने वाले बहुत से ऐसे समुदाय है, जिनको समाज से बहिष्कृत किया गया एवं वह एक वंचित वर्ग की तरह एक विशेष क्षेत्र में रहते है। उनकी स्थिति बहुत ही दयनिय होती है। वह समाज से बहुत ही पिछड़े होते है। यहाँ पर बच्चों का जीवन बहुत ही दयनिय होता है उनका रहन-सहन सामाजिक विकास, नैतिक विकास एवं शैक्षिक विकास न के बराबर हो पाता है। यहाँ लड़कियों की स्थिति बहुत ही दयनिय होती है। बच्चीयाँ कम उम्र में ही माँ बन जाती है तथा वह काफी कठिन जीवन व्यतित करती है। इस प्रकार से हम कह सकते है कि समाजिक रूप से वंचित या बहिष्कृत रूप से रहने वाले समुदाय को हाशिए पर रहने वाला समुदाय कहते है। इनके लिए सरकार ने तरह-तरह के शिक्षा कार्यक्रम चलाने का प्रयास किया है जो निम्नलिखीत है:—

07 Sunday

Scanned with CamScanner

(i) सेवाओं में आरक्षण तथा अन्य सुविधाएँ

(ii) परीक्षा-पूर्व कोचिंग

(iii) वंचित वर्गों के लिए मैट्रिक-पूर्व छात्रवृत्ति

(iv) मैट्रिक के बाद पढ़ने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति

(v) छात्र- एवं छात्राओं के लिए विद्यालय निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा

(vi) छात्र- छात्राओं के लिए छात्रावास ।

अतः इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के बच्चों के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है जिससे वंचित वर्ग के बच्चों का बहुत हद तक सुधार हुआ है। अब भी बहुत सुधार की जरूरत है जिसके लिए सरकार को अपने नीतियों में और सुधार करना होगा, हमेशा यह ध्यान देना होगा की जो भी नियम और कानून बनता है उसका लाभ वंचित वर्ग के बच्चों को मिलता है कि नहीं उस समुदाय का विकास करने के लिए सरकार को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ।

APRIL MAY JUNE

Scanned with CamScanner